अवर गेस्ट : शादाब भारतीय, म्यूजिक डायरेक्टर

संगीत की प्रतिभाओं की तलाश है...

जागरण सिटी

शुरुआत: मैं मूलतः संगीत परिवार से ताल्लुक रखता हूं। मेरे पिता उस्ताद रोशन जमाल भारतीय ऑल इंडिया रेडियो में सितार के ए ग्रेड आर्टिस्ट हैं। वर्तमान में वे यूएसए में म्यूजिक के प्रोफेसर हैं। मुझे बचपन से ही घर में संगीत का माहौल मिला। इसी कारण मेरा रुझान इस ओर हुआ। छः वर्ष की उम्र से मैंने तबले से शुरुआत की। जयपुर घराने के उस्ताद हिदायत खां साहब से तबले की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद मैंने एमए तबला मुंबई से किया। 1998 में मुझे तालमणि की उपाधि भी मिली।

संगीत उस्तादों के साथ संगत: संगीत के क्षेत्र में मैंने उस्ताद नुसरत फतेह अली खान, उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान, पद्मश्री हरिहरन, पंडित ब्रज नारायण, उस्ताद विलायत खां साहब, अनूप जलोटा जी के साथ काम किया और संगत का मौका मिला। इतने बड़े संगीत उस्तादों के साथ संगीत की बारीकियां सीखने का मौका मिला।

प्रोजेक्ट्स: मैंने राहत काजमी की फिल्म 'देख भाई देख' में म्यूजिक दिया। इसमें मुख्य कलाकार रघुवीर यादव, ग्रेसी सिंह हैं। इंटरनेशनल फिल्म 'डिस्टेंट मिराज' और 'लाइफ इन मुंबई' फिल्म में भी संगीत दिया। मेरा म्यूजिक एलबम 'इंडियन बीट बाजार वोल्यूम-1 और 2' काफी पापुलर हुआ। वोल्यूम 1 को कांस म्यूजिक फेस्टिवल में अवार्ड भी मिला।

हमारा संगीत दिल को छूता है: हमारे यहां का संगीत दिल को छू जाता है। शास्त्रीय संगीत पर लोगों के सिर वाह-वाह के रूप में हिलने लगते हैं, लोग खो जाते हैं और वेस्टर्न म्यूजिक पर लोगों के पैर थिरकते हैं।

संगीत के क्षेत्र मे रियालिटी शो जल्दी लाइम लाइट में आने का एक आसान माध्यम हो गया है। युवा जल्द से जल्द शार्टकट के माध्यम से आगे बढ़ना चाहते हैं, लेकिन संगीत की विधिवत तालीम के बगैर लंबे समय तक इस क्षेत्र में अपनी पहचान कायम रखना बहुत मुश्किल है। यह बात भोपाल आए म्यूजिक डायरेक्टर शादाब भारतीय ने कही। वे प्रदेश में संगीत के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं की खोज के लिए आए हैं, जिन्हें वे अपने एलबम और आने वाले प्रोजेक्ट में मौका देंगे। इस अवसर पर उन्होंने जागरण सिटी से की खास बातचीत।

प्रस्तुति : प्रिंस गाबा